मन की अपार शक्ति

—:o:—

अनुवादक
श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
भूतपूर्व प्रिन्सिपल
अग्रवाल विद्यालय कालिज, प्रयाग

—:o:—

प्रकाशक
छात्रहितकारी पुस्तकमाला
दारागंज, प्रयाग

निवेदन

जेम्स एलेन और उनकी धर्मपत्नी लिली ने बहुत-स
छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी हैं, जिन्होंने विदेशी नवयुवक
के विचारों में एक विचित्र क्रान्ति उत्पन्न कर दी है औ
इसलिये वे उन्हें बड़ी आदर और श्रद्धा से पढ़ते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक श्रीमती लिली की लिखी हुई 'Migh
of the mind' नामक पुस्तक का स्वच्छन्द हिन्दी अनुवा
है। इसमें यह बतलाया गया है कि मनुष्य के भीत
अपार शक्ति है, जिसका अनुभव करके वह जैसा चा
वैसा बन सकता है। प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य क
निर्माता है।

आशा है अनूदित पुस्तक का भी विद्यार्थियों
अच्छा प्रचार होगा और इसे पढ़कर वे जैसा चाहें
बन सकेंगे।

पांडेय
दारागं
अग्रवाल विद्यालय, प्रयाग
५—१२—४२
केदारनाथ गुप्त, एम० ए

विषय-सूची

—:o:—

मन की अपार शक्ति

—: o :—

मन को वश में करना

जब तुम्हारा मन इधर-उधर जाने लगे तो उसे उस ओर से खींचकर ऊँचे लक्ष्य की ओर लगाओ—

जेम्स एलेन।

जब कोई साधक ईश्वर की खोज में आगे को बढ़ता है तो उसे सबसे अधिक कठिनाई अपने मन को रोकने में पड़ती है। जो मन को रोकने का अभ्यास कर रहे हैं वे ही इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं। जब हम विचारों का संयम करने बैठते हैं तो हमें मालूम होता है कि हमारा मन कितना स्वच्छन्द और निरंकुश रहा करता है तथा उसमें सब प्रकार के विचारों के ग्रहण करने की भी कितनी अपार शक्ति रहती है। हमें यह स्मरण करके बड़ा दुख और आश्चर्य होता है कि हमने इधर उधर की निरर्थक बातों में अपना कितना अमूल्य समय नष्ट किया है। यदि इस समय को हम किसी निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर, जीवन को ऊपर उठाने वाले विचारों की ओर लगाते तो हमारा चरित्रबल कितना अधिक बढ़ जाता, हमारा हृदय कितना शुद्ध

विषय-सूची

मन की अपार शक्ति

—:o:—

मन को वश में करना

जब तुम्हारा मन इधर-उधर जाने लगे तो उसे उस ओर से खींचकर ऊँचे लक्ष्य की ओर लगाओ—

जेम्स एलेन।

जब कोई साधक ईश्वर की खोज में आगे को बढ़ता है तो उसे सबसे अधिक कठिनाई अपने मन को रोकने में पड़ती है। जो मन को रोकने का अभ्यास कर रहे हैं वे ही इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं। जब हम विचारों का सयम करने बैठते हैं तो हमें मालूम होता है कि हमारा मन कितना स्वच्छन्द और निरंकुश रहा करता है तथा उसमें सब प्रकार के विचारों के ग्रहण करने की भी कितनी अपार शक्ति रहती है। हमें यह स्मरण करके बड़ा दुख और आश्चर्य होता है कि हमने इधर उधर की निरर्थक बातों में अपना कितना अमूल्य समय नष्ट किया है। यदि इस समय को हम किसी निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर, जीवन को ऊपर उठाने वाले विचारों की ओर लगाते तो हमारा चरित्रबल कितना अधिक बढ़ जाता, हमारा हृदय कितना शुद्ध

हो जाता, हमारा प्रभाव कितना बढ़ जाता और हमारी आत्मि
उन्नति कितनी अधिक हो गई होती।

यदि उपरोक्त कथन की सचाई किसी की समझ में कि
दिन आ जाय तो उस दिन को उसके जीवन का एक ब
महत्वपूर्ण दिन समझना चाहिए।

मन पहिले पहल अपने ऊपर हाथ नहीं रखने दे
उसकी अवस्था उस बछेड़े की तरह होती है, जो मुँह में
हुई लगाम को तोड़कर फिर से स्वतन्त्र होना चाहता
वास्तव में यदि हम मन को अपने वश में करना चाहते
हमें बड़े धैर्य से काम लेना होगा और उसको इधर-उधर
से बार-बार रोकना पड़ेगा। सम्भव है निराश होकर हम
रोकने का प्रयत्न बन्द कर दें, परन्तु ऐसा करना हमारे
हुत ही घातक होगा।

मन को रोकने के लिए सबसे पहिले हमें धैर्य धारण
की आवश्यकता है। शीघ्रता करने से सिवाय हानि के ला
है। धीरे-धीरे काम करके सफलता प्राप्त करना अच्छा है,
शीघ्रता करके असफल हो जाना बुरा है। अतएव
में तङ्ग करने का अधिक प्रयत्न न करो और
करने में अधिक समय लगाओ। सम्भव है, इस
में अभ्यस्त न होने के कारण वह थक जा

अपने लक्ष्य को प्राप्त न कर सके। वास्तव में सच्चा मनुष्य वही है जो धीरे-धीरे मन को वश में कर लेता है।

मन को एक स्थान पर लगाने का अभ्यास करो। प्रातःकाल का समय इसके लिए सब से उत्तम समय है। दस मिनट से प्रारम्भ करो और फिर बीस मिनट कर दो। एक या दो सप्ताह के बाद आध घण्टे तक ले जाओ। इस प्रकार धीरे-धीरे मन किसी स्थान पर आप से आप एकाग्र होने लगेगा।

मैं तो किसी एक शब्द को ले लेती थी और उसी पर मन को एकाग्र करने का अभ्यास करती थी। उदाहरण के लिए 'सहानुभूति' शब्द ले लीजिए। इस शब्द के महत्व पर विचार कीजिए। दूसरों को सुख पहुँचाने की कितनी शक्ति इस शब्द के भीतर भरी है। इस शब्द का विश्लेषण कीजिए। हर प्रकार से इस शब्द पर विचार कीजिए। सम्भव है, आपका मन हटकर किसी दूसरे विचार में मग्न हो जाय और आप कहने लगें कि अब हम इसी विचार पर ध्यान लगावेंगे, इससे हमें बड़ा आनन्द आ रहा है। किन्तु ऐसा आप न करें, आप उधर से मन को हटाकर फिर 'सहानुभूति' शब्द पर लावें और उसी पर बार-बार लगाते रहें। दूसरे दिन आप दूसरा शब्द लें और विचार करें कि उसके प्रयोग से हमारा जीवन कितना ऊँचा उठ सकता है। जब तक जीवन को ऊपर उठाने वाले उसके असली तत्व को

सुन्दर है। मेरी बड़ी इच्छा है कि मेरा लिखना भी उसी के लिखने की तरह हो जाय। किन्तु मेरे लिए ऐसी आशा करना र्थ है, क्योंकि मेरी अध्यापिकाएँ कहती हैं कि तुम्हारा लिखना भी सुन्दर हो ही नहीं सकता।

उसकी सखी ने कहा, 'देखो, तुम्हारी अध्यापिकाएँ क्या हती हैं, इसे तो तुम भूल जाओ। उन कापियों की ओर उस ष्ट को भी, जो तुम्हें होता है, तुम परवाह न करो। तुम अपना न एकमात्र उस लिखने पर लगाओ जिसको तुम सब से धिक पसन्द करती हो। कुमारी जी के अक्षरों को बार-बार तो, उनके झुमाव को ध्यान से देखो, किस तरह सुन्दरता के प वे बनाये गये हैं, इस पर विचार करो। जब तुम भी लम उठाकर लिखने लगो तो अपने मन में कहो कि इसी कार के अक्षर मैं भी लिखूँगी, एक दिन मैं भी इतना ही न्दर लिख सकूँगी। दिन में कई बार इसी प्रकार का ध्यान रो और विचारो कि मैं उसी प्रकार के सुन्दर अक्षर लिख रही और अन्त में अब मेरा प्रयत्न सफल होगा तो मुझे कितनी सन्नता होगी।'

लड़की ने ऐसा ही करने का वादा किया। सुन्दर अक्षर लिखने का विचार उसके हृदय में धँस गया और उसमें उसे आनन्द आने लगा। छुट्टी समाप्त हो जाने पर जब वह फिर

मन की रचनात्मक शक्ति

"जब आप सच्चाई को पहिचान लेंगे तो आपके दिल को रेशानी न होगी क्योंकि वह छिपी हुई भीतरी शक्तियों को प्रग कर देगी।"

"यदि आप किसी वस्तु की प्राप्ति के सम्बन्ध में दृढ़ निश्चय कर लेंगे तो वह आपको मिल जायगी और आपके मार्ग में प्रकाश होने लगेगा।"

—बा

"I am the owner of the Sphere.
Of the seven stars, and the solar year,
Of Caesar's hand, and Plato's brain,
Of Lord Christ's heart, and Shakespeare'
strain,

सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल का स्वामी हूँ। सप्त तारामण्ड की वार्षिक परिक्रमा का मैं ही संचालक हूँ। मैं सी और प्लेटो का मस्तिष्क हूँ! मैं ईसा का हृदय श का गान हूँ।

की रचनात्मक शक्ति कितनी बड़ी है। इस श केवल विचार करने की ही शक्ति क्यों कहें। वि

रने का अर्थ है नई-नई बातें उत्पन्न करना। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन भर हम नई-नई बातें उत्पन्न करते रहे और हमें मालूम तक न हुआ। हमारी धारणा थी कि नवीन-नवीन मौलिक बातें पैदा करने की शक्ति, जो एक ईश्वरीय देन है, बड़ी दुर्लभ और असाधारण वस्तु है और सम्भव है किसी समय कठिन परिश्रम के बाद वह हमें उसी तरह मिल जाय, जैसे कोई वस्तु बाहर से मिल जाया करती है। कितनी विचित्र और आश्चर्यजनक बात है कि जिस शक्ति की हम इतने समय से खोज कर रहे थे वह हर समय हमारे भीतर ही मौजूद थी। हमें क्या मालूम कि वह शक्ति मन की एकाग्रता से हमें मिल सकती थी और उसके उचित प्रयोग से हमारा कल्याण हो सकता था। वह नदी के जल की तरह उधर तो नष्ट भ्रष्ट हो रही थी और इधर हमारा जीवन यों ही बिना सोचे-समझे बीत रहा था और हमारे दिन बेकार जा रहे थे।

इसके अतिरिक्त मेरा यह विश्वास है कि हमारी यह शक्ति सदुपयोग में न आकर अनजाने दुख पैदा करने में भी लगी। हमने समझ रक्खा है कि दुख, सुख, हानि, लाभ और बीमारी ये तो हमारे भाग्य में पहिले से ही निर्दिष्ट हैं, जिनका भोगना हमारे लिए अनिवार्य है। अपने इसी विश्वास के कारण हमने इन बातों पर अपने मन को लगाया और दुख, सुख आदि पैदा

कर लिए। लेकिन याद रखिये, 'मन अच्छे और बुरे
को स्वयम पैदा करता है' इस कथन के अनुसार
स्थितियों को उत्पन्न करने की शक्ति हमारे हाथ में है,
साथ ही यदि हम मन को एक बछड़े की तरह विषय
क्रोध, भय, घबड़ाहट आदि दुर्गुणों में दौड़ाते रहें तो वह
लिए दुखदाई परिस्थिति ही उत्पन्न करेगा। उसे इ
दौड़ाना भी हमारे ही हाथ में है। विषय, दुख और बीम
करते हैं। क्रोध से आत्मा कलुषित होता है और शरीर
इससे जीवन दुःखपूर्ण रहता है और बहुत से रोग
उत्पन्न होते हैं। डर और घबड़ाहट से जीवन में
और द्रव्य की कमी रहती है और अन्त में आपत्ति औ
मनुष्य को जीवन भर झेलनी पड़ती है।

एक बार किसी पहाड़ी के नीचे एक छोटी नद
। किसी समय वह एक ऊँची पहाड़ी से निकल क
और सैकड़ों वर्षों तक वेग से बहा करती
उसके क्षीणकाय होने के कारण उसकी पु
हो गई थी, यह किसी को मालूम न था
मनुष्य ने उसकी ओर ध्यान दिया
के जल का नियन्त्रण उचित ढङ्ग से कि
जा सकता है। उसने इस

पने हाथ में लिया। उसने बाँध बँधवाये और बड़े-बड़े हौज बनाए, उसने इञ्जनघर और पनचक्कियों का प्रबन्ध किया। थोड़े ही समय में वह छोटी नदी, जो बहुत समय तक सूखी हुई थी, अब बड़े वेग से बहने लगी। इसके फलस्वरूप उससे सैकड़ों चक्कियाँ चलने लगीं, जिनसे आटा पिसकर लोगों को मिलने लगा, गहरे बड़े-बड़े हौज पानी से भरे जाने लगे, जिनसे जनसमूह को काफी पानी सुलभ हो गया और बहुत से बिजलीघर चलने लगे जिनसे शहर की गलियाँ और जनता के घर बिजली की रोशनी से जगमगाने लगे। ऐसा (चमत्कार) क्यों हुआ, क्योंकि एक मनुष्य ने अपनी कुछ बुद्धि लगाई थी। सैकड़ों ने उस छोटी नदी को देखा था किन्तु वे कुछ भी न कर सके थे, क्योंकि न तो उनमें कल्पना थी और न वे बुद्धि का प्रयोग कर सकते थे। उनके विपरीत, एक व्यक्ति ने उसे देखकर उसकी भीतरी शक्ति का अनुभव किया और वास्तव में जैसा चित्र अपने मन में बनाया वैसा करके दिखलाया। मन भी इस छोटी नदी के समान इधर-उधर निरर्थक बहता रहता है और साधारणतया मनुष्य को उसकी शक्ति का पता भी नहीं चलता। किन्तु लोग अब जग रहे हैं और मन की अपार शक्ति पर विचार करने लगे हैं। उनके हृदयों में प्रकाश का संचार होने लगा है। अब वे मन की शक्ति द्वारा अपने जीवन को अधिक सार्थक और अधिक प्रसन्न बनाने

का उद्योग करने लगे हैं। उनको अब इस बात का ज्ञान होने लगा है कि संसार-सागर से भाग्य और परिस्थितियों की लहरें, जहाँ वे चाहें वहाँ, एक लकड़ी की तरह हमें नहीं फेंक सकतीं, हमारा भाग्य हमारे हाथ में है; परिस्थितियों को अनुकूल अथवा प्रतिकूल बनाना हमारा काम है; मन पर हमारा पूरा अधिकार है; हम अपने विचारों को जैसा चाहें वैसा बना सकते हैं; हम उनको व्यर्थ की बातों में न लगाकर अच्छे कामों में लगा सकते हैं; हमारे भीतर एक ऐसी शक्ति है। जिसका यदि उचित प्रयोग किया जाय तो हमें संसार भर का धन और सुख मिल सकता है।

जब हम इस सचाई के महत्व को समझते हैं तो हमें बड़ा आनन्द आता है। हमें यह जानकर और भी अधिक प्रसन्नता होती है कि हमारा जीवन हमारे पास रहने वाले लोगों के जीवन की तरह पूर्ण सुखी हो सकता है। हमारी आँखें खुल जाती हैं और हमारी समझ में यह बात आ जाती है कि हमारा जीवन अभी तक सुखी इस कारण नहीं था कि जो सुख स्वयं हमारे पास आना चाहता था उससे हम बिलकुल अनभिज्ञ थे। हमारी आँखें बन्द थीं और हम उस सुख को नहीं देख रहे थे। सूर्य की रोशनी का भान भी नहीं था। हम समझे हुए थे कि ईश्वर ने हमें इस रोशनी को बहुत कम दिया है और दूसरों को बहुत अधिक। यद्यपि हम सदैव यही देखते हैं कि सूर्योदय

के लिए होता है और सभी उससे यथेष्ट रूप में गरमी और रोशनी प्राप्त कर सकते हैं। हम कभी नहीं सोचते कि जिस हवा में हम साँस लेते हैं और जिसके बिना हम एक मिनट भी नहीं जी सकते वह कहाँ से आती है। हम बहुत कम सोचते हैं कि हमें रोटी खाने को और पानी पीने को कहाँ से मिलता है। तब भी हम देखते हैं कि खाने-पीने की सारी सामग्री हमारे सामने मेज पर इकट्ठी हो जाती है। इस बात पर थोड़ा विचार कीजिए तो आपको यह जानकर बड़ा आनन्द होगा कि हवा, रोशनी, भोजन और जल ही प्राप्त करने के हम अधिकारी नहीं हैं, किन्तु संसार की हर एक अच्छी वस्तु बड़ी सुगमता से हमें वैसे ही मिल सकती है जिस प्रकार वह दूसरों को मिला करती है।

जो कुछ हमारी आत्मा चाहती है, जो कुछ हमारा दिल चाहता है, जो कुछ प्राप्त करने का हम प्रयत्न करते हैं अथवा जिस उद्देश्य की पूर्ति हम करना चाहते हैं, वह सब कुछ हमें मिल सकता है। और वह सब कुछ किसी को भी मिला सकता है, शर्त केवल यही है कि हम गम्भीरता पूर्वक विचार करें और लगन, श्रद्धा और अध्यवसाय के साथ काम करें।

'यदि वास्तव में सचाई के साथ तुम मेरी खोज करोगे तो मैं निस्सन्देह तुमको मिलूँगा। यदि सचाई के साथ तुम मुझसे कोई वस्तु माँगोगे तो वह तुम्हें अवश्य दी जायगी। ढूँढो, मैं तुम्हें अवश्य मिलूँगा। दरवाजा खटखटाओ, वह तुम्हारे लिए अवश्य खोला जायगा। जो माँगता है वह पाता है।"

(बाइबिल से)

—:०:—

विचार कीमियागर (रसायनी) है

जहाँ तक मनुष्य जाति से सम्बन्ध है वहाँ तक संसार में सबसे बड़ी शक्ति 'विचारों' की है। विचारों के द्वारा ही मनुष्य ऊपर उठता है और विचारों के द्वारा ही मनुष्य नीचे गिरता है। लोग कहते हैं कि अपने अफसरों की मेहरबानी से या भाग्य से अमुक व्यक्ति को अपने साथ काम करने वालों के मुकाबिले में तरक्की मिल गई; किन्तु ऐसी बात नहीं। वास्तविक तरक्की या वास्तविक शक्ति मनुष्यों को अपने विचारों से मिला करती है।

"इस समय (बुरा या भला) जैसा मनुष्य है, वह अपने विचारों से बना है" ऐसा एक महान पुरुष ने कुछ सौ वर्ष पहिले कहा था। आश्चर्य की बात है कि तब से इतना समय बीत गया किन्तु अभी तक उस महापुरुष के कथन की सचाई को अधिकांश मनुष्यों ने नहीं समझा है। यह आश्चर्य और भी ... जाता है जब मनुष्य कहता है कि अपने चरित्र और ...ण करने वाले हम स्वयं नहीं हैं; इसकी जिम्मे... ...स्थिति, माँ-बाप, वायुमण्डल या किसी अन्य ... पर है। मनुष्य जब जीवन में असफल होता ... इन-इन कारणों से मुझे सफलता नहीं मिली।

किन्तु वह अपने दिल की खोज नहीं करता है; वास्तव में वह जीवन में सफल या असफल अपने विचारों के कारण होता है।

"वही मनुष्य बुद्धिमान है जो मन को अपने वश में रखता है। विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष का इन विषयों में सङ्ग बढ़ता जाता है और इस सङ्ग से वासना उत्पन्न होती है। इस वासना की तृप्ति होने में विघ्न पड़ने से क्रोध की उत्पत्ति होती है; क्रोध से अविवेक होता है, अविवेक से स्मृतिभ्रंश, स्मृतिभ्रंश से बुद्धिनाश और बुद्धिनाश (पुरुष का) सर्वस्व नाश हो जाता है।"

एक मूर्ख, बुद्धू और कपटी व्यक्ति का उदाहरण लीजिए। वह अपने विचारों से ऐसा बना है। लचर विचारों ने उसे इतना मूर्ख बना रक्खा है। स्त्री-पुरुषों के चेहरों को देखकर आप फौरन बता सकते हैं कि प्राय. वे बैठे-बैठे क्या-क्या सोचा करते हैं।

गरमी के बादल की तरह ऐसे लोगों के मन में बेहूदा विचार एक ओर पैदा हुआ और दूसरी ओर निरर्थक निकल गया। उनका एक विचार एक मिनट तक भी कभी नहीं ठहरता, और सभी तरह के विचारों के लिए उनकी मस्तिष्क के द्वार निरन्तर खुले रहते हैं।

इस विषयी पुरुष को देखो जिसने अपने दिव्य चेहरे को

विषय और बुरी आदतों से खराब कर डाला है। जो बुरी भावनाएँ उसके मन में मौजूद हैं वे ही उसके चेहरे पर आपको दिखलाई पड़ेंगी।

ऐसा कहा जा सकता है कि चेहरे को देखकर मनुष्य के विचारों के जानने में भूल हो सकती है, किन्तु ऐसा मैं नहीं सोचती। जिसके मन में पवित्र विचार होते हैं, उसका चेहरा विषयी मनुष्य के चेहरे की तरह नहीं होता। इसी प्रकार जो त्यागी है, उसका चेहरा शराबी के चेहरे की तरह नहीं हो सकता। प्रकृति कभी भी भूल नहीं करती; हमें कौड़ी-कौड़ी अपनी भूलों के लिए चुकाना पड़ता है।

यदि मनुष्य अपनी अपार शक्ति का अनुभव करे तो इस प्रकार की अशान्ति से बच सकता है। लोगों को जमा करो और उनसे कहो "अरे लोगों, तुम्हारे पास अनमोल पारस पत्थर है। तुम एक बड़े बुद्धिमान कीमियागर हो। तुम अपनी अपार मानसिक शक्ति द्वारा अपने जीवन की खराब धातु को शुद्ध सोना सकते हो।"

इयो, अनुभव करके तो देखो। सम्भव है लोग तुम्हें कहें किन्तु इसकी परवाह न करो। तुम में अपार ; इस सचाई का अनुभव करो। मनुष्य मात्र में उसे

कदम बदल देने वाली यह विचित्र शक्ति मौजूद है, किन्तु वह
से नहीं जानता।

जब नेता और आचार्य लोग इस शक्ति को नहीं जानते तो
न साधारण इसे किस प्रकार जान सकते हैं। अनेक गिरजा-
रों, अनेक समाजों, अनेक संघों और अनेक मण्डलों की
ठकों में आप सम्मिलित होते हैं, वहाँ बड़े-बड़े लोगों के
याख्यान आप सुनते हैं, जिनमें कहा जाता है, यह करो, वह
करो। बड़ी-बड़ी धार्मिक पुस्तकों को आप पढ़ते रहते हैं और
सभ्य बनने के लिये नाना प्रकार के आप प्रयत्न करते हैं लेकिन
उस अमूल्य वस्तु के बारे में आपको कुछ नहीं बताया जाता, जो
मनुष्य के हृदय में बन्द है और जो इस बात की प्रतीक्षा में
रहती है कि दरवाजे को खोलकर उसे बाहर निकालें।

यदि कोई बहादुर पादरी अपने दैनिक धर्मोपदेश के स्थान
में जिसका असर (वर्तमान अशान्ति को देखकर कहना पड़ता
है) अभी तक लोगों पर बहुत कम पड़ा है, उनसे जोर देकर
यह कहे कि घर जाओ और 'मन की शक्ति' पर विचार करो तो
इससे कितनी शिक्षा मिले और उपकार हो। ऐसी सुविधा न
मिले तब भी लोगों से 'विचार करने' के लिए कहते रहो। जब
कोई विचार करने बैठता है तो उसके लिए ऐसा करना सरल
है किन्तु जब जनता से विचार करने के लिए कहा जाता है तो

बहुत-सी कठिनाइयाँ सामने आती हैं जिनका हल करना कठिन हो जाता है।

वह समय कब आयेगा जब मनुष्य देखेगा और समझेगा कि हमारा जीवन केवल उपदेश को सुनकर काम करने से नहीं किन्तु मन की शक्ति पर विचार करने और उसके अनुसार काम करने से सफल बन सकता है।

'मनुष्य 'विचार' करके जैसा चाहे वैसा बन सकता है', यह बात कितनी सरल है, किन्तु कितनी महत्वपूर्ण है। इससे शताब्दियों से कितना उपकार होता आया है। किसी विषय पर गहराई के साथ कुछ समय तक विचार कीजिये। आपके मस्तिष्क में उसी प्रकार के विचार करने के अणु बन जायँगे। यदि आपके विचार हानिकारक हुए अथवा यदि विचार पापपूर्ण और पतन की ओर ले जाने वाले हुए तो फिर आपको पता चलेगा कि ऐसे-ऐसे विचारों के लिए जो अणु अपने मस्तिष्क में तैय्यार किये हैं, उनको नष्ट करना और उनकी गुलामी से छुटकारा पाना कितना कठिन है।

जिस प्रकार लोहे की जंजीर एक वस्तु को जकड़ लेती है ... एक विचार भी आप के मन को जोर से जकड़ लेता ... विचार खराब हैं तो उन्हीं के अनुसार आप ... जायँगे। आप बच नहीं सकते। यदि आपके

विचार अच्छे और पवित्र हैं तो उन्हीं विचारों के अनुसार आप भी अच्छे और पवित्र बन जायँगे। इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। जैसे मनुष्य विचार करता है वैसा ही बन बनता है।

महात्मा क्राइस्ट का कथन है, "वे धन्य हैं जिनके हृदय शुद्ध हैं (पवित्र आत्मा) क्योंकि ईश्वर के दर्शन उन्हीं को होंगे।'

हरेक मनुष्य को अपने जीवन-इतिहास में यह लिख लेना चाहिए 'भला या बुरा जैसा भी मैं हूँ, उसे मैंने अपने विचारों से बनाया है।' यदि हम इन बातों को समझ लें तो हमसे बढ़ कर दूसरा कोई सुखी नहीं है।

———

इच्छा या महत्त्वाकांक्षा

इच्छा या महत्त्वाकांक्षा के लिए मन में जो विचार कि
जाता है उसी से इच्छा या महत्त्वाकांक्षा पैदा होती है। जि
वस्तु के पाने की हम इच्छा करते हैं उस पर विचार करते हु
उसके प्रयत्न में लग जाना चाहिए। हम मानते हैं कि अमु
वस्तु हमें मिल जाय, किन्तु जाँच करने पर मालूम होता है कि
वस्तु पाने की यह हमारी इच्छा प्रबल नहीं होती। हम सोचते
हैं कि हम एक आदर्श के लिए प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु जब हम
उसके लिए किये गये परिश्रम पर विचार करते हैं तो हमें मालूम
होता है कि जी तोड़कर हम परिश्रम नहीं कर रहे हैं। हम कहते
हैं कि यदि यह आदर्श हमें प्राप्त हो जाय तो अच्छा है, नहीं तो
हमें उसकी कोई परवाह नहीं है। इस ढीलेपन से कोई सफलता
नहीं मिलती। इसे हम इच्छा नहीं कह सकते। यह तो एक सनक
है। जिस तरह पैदा हुई उसी तरह गायब भी हो गयी। इस
प्रकार की लचर इच्छा का हमारे चरित्र पर बहुत बुरा प्रभाव
है। यदि कोई मन की शक्ति को प्रबल बनाना चाहता है,
कोई संसार में मन की शक्ति द्वारा कोई महान् काम करना
है, यदि कोई कीड़े-मकोड़ों की तरह अपना जीवन नहीं

व्यतीत करना चाहता तो उसे अपने मन रूपी दरवाजे में चंचल इच्छाओं, और कुत्सित विचारों को बिलकुल घुसने ही नहीं देना चाहिये। जो लोग शङ्कित हृदय से किसी बात की इच्छा एक सप्ताह, एक मास व एक वर्ष तक करते हैं और फिर उसे अधूरा छोड़ कर दूसरी बात की इच्छा करने लगते हैं, उनकी मानसिक शक्ति इतनी क्षीण हो जाती है कि वे अपना मन किसी एक उद्देश्य पर पूर्णरूप से नहीं लगा सकते और अन्त में उनका जीवन असफल रहता है। ऐसे मनुष्यों की हालत उस पुरुष की तरह होती है जिसका वर्णन जेम्स की पुस्तक के पहिले अध्याय में इस प्रकार किया गया है :—

"जिसका चित्त चंचल है वह समुद्र की उस लहर के समान है जो हवा से इधर-उधर टकराया करती है। उसको ईश्वर का कोई प्रसाद नहीं मिलता। अव्यवस्थित मनुष्यों के सब काम अनिश्चित रहते हैं।"

अव्यवस्थित लोगों के मन आज एक बात की इच्छा करते हैं और कल किसी दूसरी बात की। उनकी हालत उस जहाज की तरह होती है जिसमें न तो पतवार है और न कुतुबनुमा है। जिसका लक्ष्य किसी बन्दरगाह में जाने का नहीं है और जो चंचल लहरों में पड़ा हुआ इधर-उधर उतराता रहता है। ऐसे लोगों को कभी कोई सफलता जीवन में नहीं मिल सकती।

प्त करने की इच्छा है। इस सम्बन्ध में मुझे केवल यही कहना कि आप अच्छी वस्तु को लेकर आगे बढ़ें और तब सोचिये कि इस वस्तु की इच्छा आपको थी या नहीं। आप यही कहेंगे कि हाँ हाँ, मैं तो यही वस्तु चाहता था, अरे यह मुझे मिल जाती तो मेरा जीवन सफल होता और मुझे बड़ा सुख मिलता। उस समय खराब वस्तु का प्रश्न ही आपके सामने न उपस्थित होगा। खराब वस्तु को लेकर आगे चलने पर जब अनिष्ट परिणाम उपस्थित होंगे तब आप स्वयं कहेंगे कि यह क्या हुआ, इसके भीतर सुख का भ्रम था; किन्तु वास्तव में यह सुख नहीं था।

उदाहरण लीजिए। मान लीजिए आपकी इच्छा है कि मेरे पास प्रचुर धन हो जाय और दुनिया मुझे करोड़पती कहने लगे। इस प्रयत्न में जब आप लगते हैं तो आपको बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, चाहे जितना रुपया आपके पास हो जाय, आपको सन्तोष नहीं होता और आपका जीवन अशान्त रहता है। तब आप उधर से अपनी तबियत को हटाकर सच्चे धन को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, जिससे आपको केवल सुख ही नहीं मिलता किन्तु आपकी आत्मा को भी सन्तोष होता है।

अतएव इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हम बड़ी होशियारी से अच्छी इच्छा उत्पन्न करने का प्रयत्न करें। महात्मा

प्राप्त करने की इच्छा है। इस सम्बन्ध में मुझे केवल यही कहना है कि आप अच्छी वस्तु को लेकर आगे बढ़िये और तब समझिये कि इस वस्तु की इच्छा आपको थी या नहीं। आप यही कहेंगे कि हाँ हाँ, मैं तो यही वस्तु चाहता था, अरे यह मुझे मिल जाती तो मेरा जीवन सफल होता और मुझे बड़ा सुख मिलता। उस समय खराब वस्तु का प्रश्न ही आपके सामने न उपस्थित होगा। खराब वस्तु को लेकर आगे चलने पर जब अनिष्ट परिणाम उपस्थित होंगे तब आप स्वयं कहेंगे कि यह क्या हुआ, इसके भीतर सुख का भ्रम था; किन्तु वास्तव में यह सुख नहीं था।

उदाहरण लीजिए। मान लीजिए आपकी इच्छा है कि मेरे पास प्रचुर धन हो जाय और दुनिया मुझे करोड़पती कहने लगे। इस प्रयत्न में जब आप लगते हैं तो आपको बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, चाहे जितना रुपया आपके पास हो जाय, आपको सन्तोष नहीं होता और आपका जीवन अशान्त रहता है। तब आप उधर से अपनी तबियत को हटाकर सच्चे धन को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, जिससे आपको केवल सुख ही नहीं मिलता किन्तु आपकी आत्मा को भी सन्तोष होता है।

अतएव इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हम बड़ी होशियारी से अच्छी इच्छा उत्पन्न करने का प्रयत्न करें। महात्मा

ईसा के इस कथन के अनुसार चलिए कि ईश्वर के राज्य और उसकी नेकी की खोज करने से दुनिया की सब वस्तुएँ आपसे आप मिल जाती हैं। जब उसके राज्य में किसी वस्तु की इच्छा करेंगे तो वह इच्छा अच्छी होगी, हम बहुत सोच समझकर ऐसी ही इच्छा उत्पन्न करेंगे जिससे हम अच्छे नागरिक बनें, दूसरों को लाभ पहुँचा सकें और हमारा जीवन सुखी हो। महात्मा ईसा ने समझ-बूझ कर कहा है कि अच्छी से अच्छी वस्तुओं को पाने की इच्छा करो। उन्होंने वास्तव में 'मन की अपार शक्ति' का पाठ पढ़ाया, जब उन्होंने यह लिखा था—

"मेरे भाइयो, जो वस्तुएँ अच्छी हों, जो ईमानदारी और न्याय से प्राप्त की गई हों, जो पवित्र और सुन्दर हों, जो की... देने वाली हों, उन पर विचार करो और उन्हें प्राप्त करने की कोशिश करो।"

तुम्हें क्या चाहिए

"माँगने से तुम्हें सब वस्तुएँ मिलेंगी और तुमको पूर्ण सुख होगा।"

—महात्मा ईसा

"मन को शान्त रक्खो। इस बात का अनुभव करो कि संसार बड़ा सुन्दर है और उसमें बड़े-बड़े अमूल्य रत्न भरे हैं जो तुम्हारे दिल में है, जो तुम चाहते हो, जो तुम्हारी प्रकृति के अनुकूल है वह सब इस संसार में भरा हुआ है। तुम्हें अवश्य मिलेगा।"

—एडवर्ड कारपेन्टर

ज्यों पर सोता बहता है,
चलता है उस ओर।
जहाँ उसे मलती है प्रियतम,
जल की राशि अथोर।
त्यों कल्याण प्रवाहित होता,
मान प्रकृति आदेश।
उस मानसप्रति जिसमें बसता,
विमल प्रसाद विशेष।

हम बाइबिल के अमूल्य वचनों पर विश्वास नहीं करते।

अपनी और दूसरी धर्म पुस्तकों में हम पढ़ते हैं कि नेक मनुष्य का सदा भला होता है, किन्तु इस पर भी हमारा विश्वास नहीं है। बाइबिल बतलाती है, "ईश्वर हमारा चरवाहा है, हमें किसी बात की कमी न रहेगी, जो ईमानदारी के रास्ते पर चलते हैं उन्हें सब अच्छे पदार्थ मिलते हैं।" किन्तु शताब्दियों से ईसाइयोंने इसके विरुद्ध आचरण किया है। उन्होंने लोगों को उपदेश किया है कि ईश्वर पर जितना अधिक तुम्हारा प्रेम होगा और जितनी अधिक सेवा तुम उसकी करोगे उतना ही तुम्हें दुःख मिलेगा और जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने जनता को कितनी बेहूदी बात का उपदेश किया है और कितनी आत्माओं के सुखों को नष्ट करके उन्हें दुखी बनाया है। परिणाम इसका यह हुआ कि वे बेचारे स्वयं ही दुखी नहीं रहते; किन्तु जहाँ कहीं मुँह लटकाये जाते हैं, वहाँ अपना बुरा प्रभाव दूसरों पर भी डालते हैं।

किसी समय में यह धर्म समझा जाता था कि हम सुखी न रहें और दूसरों को भी सुखी न रहने दें। किन्तु जब दुख का प्रवेश हुआ तो पादड़ी कहने लगे कि इस दुख के लिए हमें ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि उसने हमें शुद्ध करने के लिए यह दुख दिया है। जनता ने इस बात पर विश्वास ... ईश्वर को अधिक प्यारा होता है उसको अधिक दुख

मिलता है। यह समझ कर उन्होंने उन दुखों को सहा। याद रक्खो, ईश्वर हमें दुख नहीं देता और न वह हमें आपत्तियों में डालता और दरिद्र बनाता है। वास्तव में हमें दुख इस कारण मिलता है कि हम पाप करते हैं और बुरी-बुरी बातें सोचते हैं। इसी कारण हमारे पास आपत्तियाँ आती हैं। हम स्वयं अँधेरे में टटोलते हैं और भूल पर भूल करते हैं और फिर माथे पर हाथ रखकर रोते हैं और कहते हैं कि ईश्वर ने हमारी ऐसी दुर्गति की है।

"ऐ सोने वालो उठो, अँधेरे से बाहर आओ। ईश्वर तुमको प्रकाश देगा।" जब कोई महात्मा ईसा से किसी वस्तु की प्रार्थना करता था तो वे पूछते थे, "तुम्हें क्या चाहिए?" यदि कोई कुछ माँगता था तो वह उसे शीघ्र मिलता था। वे अपने शिष्यों से कहते थे, "ईश्वर से माँगो तो मिलेगा, यहो नहीं तुमको पूर्ण सुख होगा।" यदि हम गरीब हों अथवा किसी परेशानी में हों, तो क्या हमे पूर्ण सुख मिल सकता है? स्पष्ट उत्तर है, नहीं मिल सकता। तो क्या फिर हम कह सकते हैं कि हमें जीवन का पूर्ण सुख मिल रहा है? जब हमारे पास पैसा नहीं है, हमारा शरीर रोगी है, हमें सर्वाङ्ग शिक्षा नहीं मिली, हमारे लालायित हृदय में प्रेम और मित्रता का भाव नहीं है और इच्छा होते हुए भी हमारे जीवन के सुधार का

अवसर नहीं मिला। जिन महात्मा ईसा के हम अपने को
यायी समझते हैं उन्होंने कहा है—"मैं अब आ गया हूँ,
के तुम्हें जीवन मिले और सुख की सामग्री प्राप्त हो, मुझे
लूम है कि तुम्हें कौन कौन वस्तु चाहिए और वे सब वस्तुएँ
हें दी जायेंगी क्योंकि तुम्हारे जीवन को उनकी आवश्य-
ता है।"

पाठक वृन्द, आप बताइए, आपको किन-किन वस्तुओं की
वश्यकता है। अपने को सर्वांग, सुखी और सफल बनाने के
ए आपको क्या चाहिए? क्या आप समाज के एक बलवान
फल और सुखी सदस्य बनना चाहते हैं? यदि आप चाहते हैं
निस्सन्देह बन जायेंगे।

ईश्वर का अपना मुँह लगा कोई नहीं है। उसका बनाया
या सूरज ऊँच और नीच सब को समान दृष्टि से रोशनी देता
। उसके भेजे हुए बादल समान दृष्टि से न्यायी और अन्यायी
नों के घर में जल की वृष्टि करते हैं। कहने का अर्थ यह है
ईश्वर अपनी ओर से सबको अपनी वस्तु उदारता के साथ
ता है। सूर्य मैली गली में भी उसी तरह चमकता है जिस तरह
हल में चमकता है। बादल गरीबों के घरों में भी पानी उसी
ह बरसता है जिस तरह अमीरों के बागीचों में बरसाता है।
... की दी हुई वस्तु सब को मिलती है। ईश्वर की दी हुई

किन्तु अमुक व्यक्ति को इतनी मिलनी चाहिए और अमुक को इतनी, यह भेद-भाव मनुष्य ने पैदा कर रक्खा है, मैं ईश्वर का अधिक प्यारा हूँ इसलिए मुझे अधिक मिलना चाहिए और तुम ईश्वर के कम प्यारे हो इसलिए तुम्हें कम मिलना चाहिए; यह भेद-भाव मनुष्य के मन की उपज है इसलिए इस भेद-भाव का कोई महत्व नहीं है।

सीधे अपने दिल की खोज करो और पता लगाओ कि जीवन को सफल बनाने के लिए तुममें किस वस्तु की कमी है। कमी की दवा तुम्हें अपने दिल में ही मिलेगी। जब वह मिल जाय तो उसे स्वीकार कर लो और ईश्वर को धन्यवाद दो। उस दवा रूपी शक्ति का प्रकाश तुम्हारे जीवन में बराबर होता जायगा, इसका विश्वास रखकर खुशी मनाओ। जीवन को योग्य बनाते रहोगे तो यह शक्ति तुम्हें अवश्य मिलेगी। जिस बात की तुम्हें इच्छा हो उसको ईश्वर से माँगो। विश्वास रक्खो कि वह तुम्हें मिलेगी।

ये बातें किसी सुनी सुनायी बात या सिद्धान्त के आधार पर नहीं लिखी आ रही हैं, किन्तु ये मेरी अपनी अनुभव की हुई हैं और मेरी जानी हुई हैं। लगभग १५ वर्ष पहिले इन बातों की सचाई का भान मेरे हृदय में पहले-पहल हुआ था और इसके बाद मेरा विश्वास इस पर बराबर बढ़ता गया। जीवन में जिन-

जिन वस्तुओं की मैंने इच्छा की उनको मैंने प्राप्त कर लिया। हृदय ने जो चाहा और जिस पर विश्वास किया वह मुझे मिल गया। जब से मैंने "सीयाराम मैं सब जग जानी, करौं प्रणाम जोर जुग पानी" का अनुभव किया, जब से मैंने यह जाना कि मेरा सम्बन्ध ईश्वर से क्या है, तब से प्रेम, मित्रता आदि सब आवश्यक गुण मुझे मिल गये। मुझे पूर्ण आशा है कि भविष्य में अभी और न मालूम कितनी बरकतें मुझे मिलेगी। अभी तो मुझे जनता की सेवा करने का अधिक अवसर प्राप्त होगा, अभी मेरा कार्य-क्षेत्र और भी अधिक बढ़ेगा और अभी मुझे विद्योपार्जन का और अधिक समय मिलेगा। मेरी महत्वाकांक्षाओं के मार्ग में मेरे सिवाय कोई और रोड़े नहीं अटका सकता। मन की जिस शक्ति से मुझे हर बरकत मिलती है। यदि मैं उसे अपने आलस्य, अविश्वास या भ्रष्टाचार से खराब करना चाहूँ तो कर सकती हूँ, किन्तु उसमें कोई दूसरा छेड़छाड़ नहीं कर सकता। यदि मैं स्वयं चाहूँ तो अपने नेक कामों का अन्त कर सकती हूँ, पापात्मा बन सकती हूँ, चरित्र ऊँचे करने वाले विचारों को छोड़ सकती हूँ और भूल पर भूल कर सकती हूँ, इसमें कोई दूसरा बोल भी नहीं सकता, लेकिन ऐसा मैं करूँगी
इसलिए ऐ पाठक वृन्द, दुनिया की सारी वस्तुएँ मेरी हैं
हैं, इस पर आपको आनन्द मनाना चाहिए।

ार पापात्मा हरगिज नहीं हैं, जब तक आप स्वयम् वैसा बनना
मन्द न करें। आप तो ईश्वर के एक स्वतन्त्र पुत्र हैं। आप
रीब और कमीने हरगिज नहीं हैं, जब तक आप स्वयम् गरीबी
ौर कमीनापन पसन्द न करें। ईश्वर की दी हुई बरकतों में
ापका पूरा-पूरा अधिकार है। यदि आपको सुख न मिले,
दि आपको बरकत न मिले तो इसका अर्थ यह नहीं है
के ईश्वर आपसे अप्रसन्न है। आप धार्मिक होने भी दुखी नहीं
े। ईश्वर के भक्त होते हुए भी यह आवश्यक नहीं है कि
आप मुँह लटकाए रहें और उन वस्तुओं को पसन्द करें जो
सुन्दर नहीं हैं। ये सब विचार धर्म से बहुत दूर हैं और इनमें
भलाई, सचाई और धार्मिकता नहीं पाई जाती। ये सब विचार
सचाई से बहुत दूर हैं और उन्हीं लोगों के मन में उठा करते हैं
जो बैठे बैठे अट-शट सोचा करते हैं, और जीवन में भूल पर भूल
करते रहते हैं। ऐसे-ऐसे विचारों को छोड़ो और सुख शान्ति,
आनन्द और सफलता का जीवन व्यतीत करो। मजबूत बनो
और सचाई को पहचानो। तुम निस्सन्देह स्वतन्त्र हो जाओगे।

"हर एक अच्छी वस्तु सड़क पर घूम रही है। उस सच्चे
नियम पर विश्वास करो जो हमारे जीवन की प्रत्येक दिशा में
काम कर रहा है।"

परिस्थितियों पर विचारों का प्रभाव

यह बात निर्विवाद है कि परिस्थितियों का प्रभाव हमारे जीवन के सुख और दुख पर विशेष रूप से पड़ा करता है। इस सम्बन्ध में दो दृष्टिकोण हैं। पहिला दृष्टिकोण यह है कि हम और आप दोनों परिस्थितियों के दास हैं। इसके अनुयायियों को चारों ओर गरीबी, गन्दगी और गन्दे घर दिखलाई पड़ते हैं। शहर और अब देहातों के लोग भी, शराब, तम्बाकू आदि नशे की चीजें पीते और जुआ आदि दुर्व्यसनों में फँसे हुए उनको दिखलाई पड़ते हैं। वे ऐसे लोगों को गन्दी गलियों और अँधेरी कोठरियों में रहते हुए पाते हैं और फिर उनके ऐसे दुखी जीवन के लिए परिस्थिति के सिर दोष मढ़ते हैं। कुछ समय हुआ एक सज्जन कह रहे थे "ऐसी परिस्थिति में कोई सुखमय जीवन किस प्रकार व्यतीत कर सकता है। उस गली को तो देखो जिसमें वह रहता है, उन लोगों को तो देखो जिनके साथ उसे रहना पड़ता है, और उस घर को देखो जिसमें वह रहता है।" ऐसे लोग इस बात को भूल जाते हैं कि उस मनुष्य ने उस गन्दी जगह को स्वयं रहने के लिए चुना है। गन्दी संगति गन्दा घर उसने स्वयं पसन्द किया है। यदि वह ऐसी

परिस्थितियों में रहता है तो दोष उसी मनुष्य का है। यदि आप किसी दिन किसी गन्दी गली में जाकर लोगों को देखें तो इसकी सचाई आपको मालूम हो सकती है। देखो वह शराबी अपनी बुरी सुहबत और शराब पीने की आदत छोड़ रहा है। देखो अब वह प्रातःकाल अपने काम पर जाता है और हर सप्ताह अपना वेतन लाता है। उससे वह अपनी स्त्री और बच्चों के लिए कपड़ा और भोजन खरीदता है और घर के लिए और दूसरा सामान लाता है। अब वह गन्दी गली को छोड़कर अच्छे मुहल्ले में सफाई के साथ रहने लगा है। परिस्थिति का उस पर कोई असर नहीं पड़ा है। मन पर विजय पाकर उसने परिस्थितियों पर भी विजय प्राप्त कर ली है।

यह बात नितान्त असम्भव है कि एक साफ-सुथरा मनुष्य गन्दे स्थान में रह सके, एक विचारशील मनुष्य शराब पीने के लिए विवश किया जाय या एक परिश्रमी और वफादार सच्चे मनुष्य का पतन हो जाय। जिस मनुष्य ने अपने मन को वश में कर लिया है उसको आप चाहे जहाँ रक्खें, वह अपने मन के अनुसार स्वयं परिस्थिति बना लेगा, पहिले मनुष्य जाति को बदल डालिये फिर परिस्थिति आपसे आप बदल जायगी।

अब दूसरे दृष्टिकोण के लोगों की बातें भी सुनिये। कुछ शिक्षित लोग शिक्षित समाजों में रहते हैं, जहाँ उनका अनेक

जिसका थोड़े ही दिनों में बड़ा आश्चर्यजनक परिणाम हुआ। उसके अच्छे दिन आने लगे। उसने अपने उसी काम में दिलचस्पी लेना शुरू किया जिससे उसको पहिले घृणा थी। उसको अब आनन्द अनुभव होने लगा। उसका रहन-सहन जादू की तरह एकदम बदल गया। दोस्तों और साथियों में उसे एक नई दिलचस्पी होने लगी, जिसका पहिले अभाव था उसको ऐसे अवसर मिलने लगे कि वह दूसरों को लाभ पहुँचा कर अपने को धन्य मान सके। और अब उसने उस काम को खुले दिल से करना शुरू किया जिसे वह नापसन्द करता था। इस मनुष्य ने अपने मन को बदल दिया और मन के बदलने से परिस्थितियाँ उसकी इच्छा के अनुसार उसके अनुकूल हो गई। उसने मुझे लिखा कि जहाँ पहिले मुझे दुःख और निराशा दिखलाई पड़ती थी वहाँ अब मुझे प्रकाश, सुख और सफलता के दर्शन हो रहे हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि सुख और दुख का सम्बन्ध किसी स्थान विशेष से नहीं है किन्तु मनुष्य के मन से ही है।

स्मरण रक्खो, यदि तुम्हारा निर्वाह किसी एक परिस्थिति में नहीं हो सकता तो फिर दूसरी परिस्थिति में भी नहीं हो सकता। न मालूम कितने स्त्री-पुरुषों ने इस बात का अनुभव किया है और मेरे अनुभव में भी यही बात आई है कि सुख और सफलता उसी परिस्थिति में मिली है जिसमें आशा नहीं थी। जिस सुख

धन व्यय किया है और महान कष्ट सहन किया है। यह पत्थर वास्तव में बड़ा अमूल्य है। इस पत्थर में धातु को सोना बना देने की शक्ति वास्तव में है लेकिन यह उन्हीं को मिलता है जो अपने दिल और दिमाग में इसको खोज करते हैं। वास्तव में यह मनुष्यों के विचारों में ही मिलता है।

'विचारों की शक्ति' कितनी महान है, इस विषय पर बहुत लिखा जा चुका है, लेकिन ऐसा मालूम होता है जैसे हमने कुछ भी नहीं लिखा है। इस महत्वपूर्ण विषय पर हम चाहे जितना लिखते जायँ किन्तु लिखने से हमारा पेट कभी नहीं भरता।

वास्तव में यह पत्थर सब लोगों के पास मौजूद है, किन्तु उनको मालूम नहीं है! यह अमूल्य रत्न उनकी हथेली में ही रक्खा हुआ है किन्तु वे जानते नहीं। उनको कहीं बाहर ढूँढने की जरूरत नहीं है। यह उनका है और उनके विचारों में मौजूद है। "जैसा मनुष्य विचार करता है वैसा ही वह बनता भी है।" हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि इस समय हम में जो योग्यता है या जिस पद पर हम काम कर रहे हैं वह हमारे विचारों की बदौलत है और आगे भी सम्पूर्ण उन्नति हमारे विचारों की बदौलत होगी। हमें अपने विचारों की बदौलत पारस पत्थर भी मिलेगा। अभी हम विचार कर रहे हैं और उसके मार्ग में हैं।

बहुत से धर्म दिखलाई देने लगे जिनमें आपस मे बड़ा मतभेद रहता है।

ऐसे कठवैद्य और अपने को पैगम्बर कहने वाले लोग मौजूद हैं जो अपने देश मे और विदेशो में एक काफी रकम लेकर पारस पत्थर बेचने का दम भरते हैं और बहुत से लोग भी ऐसे हैं जो रकम देकर इसे खरीदने के लिए तैयार हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि ये भोले-भाले लोग इस बात को नहीं समझते कि उन पैगम्बरों के पास यदि वह पारस पत्थर होता जिससे कुधातु सोना बन जाता है तो उन्हें रुपये लेकर बेचने की क्यों जरूरत पड़ती? खरीदने वालों को बड़ी उत्सुकता रहती है कि कहीं कोई बतावे जहाँ जाकर वह पारस पत्थर उठा लावें; किन्तु खेद तो इस बात का है कि उनका रास्ता गलत है। साइमन के बारे में बाइबिल में इस प्रकार लिखा है :— "जब साइमन को मालूम हुआ कि पैगम्बरों के हाथ रखने से उसकी आत्मा पवित्र हो गई है तो वह उन्हें धन देने लगा और बोला, कृपया मुझे भी वह शक्ति दीजिए जिनके द्वारा मैं भी हाथ रखकर दूसरों को पवित्र आत्मा बना सकूँ।"

जब वह उस महान शक्ति को रुपया देकर खरीदने के लिए तैयार हुआ तो उस पर बड़ी फटकार पड़ी। पारस पत्थर को लोग अभी तक नहीं पा सके हैं, यद्यपि उन्होंने उसके लिए प्रचुर

धन व्यय किया है और महान कष्ट सहन किया है। यह पत्थर वास्तव में बड़ा अमूल्य है। इस पत्थर में धातु को सोना बना देने की शक्ति वास्तव में है लेकिन यह उन्हीं को मिलता है जो अपने दिल और दिमाग में इसकी खोज करते हैं। वास्तव में यह मनुष्यों के विचारों में ही मिलता है।

'विचारों की शक्ति' कितनी महान है, इस विषय पर बहुत लिखा जा चुका है, लेकिन ऐसा मालूम होता है जैसे हमने कुछ भी नहीं लिखा है। इस महत्वपूर्ण विषय पर हम चाहे जितना लिखते जायें किन्तु लिखने से हमारा पेट कभी नहीं भरता।

वास्तव में यह पत्थर सब लोगों के पास मौजूद है, किन्तु उनको मालूम नहीं है! यह अमूल्य रत्न उनकी हथेली में ही रक्खा हुआ है किन्तु वे जानते नहीं। उनको कहीं बाहर ढूँढने की जरूरत नहीं है। यह उनका है और उनके विचारों में मौजूद है। "जैसा मनुष्य विचार करता है वैसा ही वह बनता भी है।" हमें इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि इस समय हम में जो योग्यता है या जिस पद पर हम काम कर रहे हैं वह हमारे विचारों की बदौलत है और आगे भी सम्पूर्ण उन्नति हमारे विचारों की बदौलत होगी। हमें अपने विचारों की बदौलत पारस पत्थर भी मिलेगा। अभी हम विचार कर रहे हैं और उसके मार्ग में हैं।

यदि ये लोग न डरते, यदि इन लोगों के विचार भिन्न होते तो इनका जीवन कितना सुखमय हुआ होता। यही बात सब अवगुणों के बारे में कही जा सकती है। स्त्री और पुरुष गरीबी के बारे में विचार करते रहते हैं, उसके बारे में बातचीत करते हैं और उसी तरह से रहते हैं, यहाँ तक कि एक दिन गरीबी वास्तव में उनको धर दबोचती है और निमंत्रित मेहमान की तरह उनके घर में रहती है। कुछ लोग बीमारी के बारे में सोचा करते हैं। वे कहते हैं आज हमारी तबियत भारी है, आज हमारे सिर में दर्द है। कहते ही नहीं बीमारों की तरह रहते भी हैं। यहाँ तक कि एक दिन बीमारी का भूत उन पर सवार हो जाता है और निमन्त्रित मेहमान की तरह उनके घर में रहने लगता है। ये पीड़ित लोग समझते हैं कि हमीं को गरीब और बीमार बनना था, हमी इसके लिए चुने गये थे और फिर अपने मिलने वालों से सहायता की प्रार्थना करते हैं। ठीक है हमें उनके साथ रहम अवश्य करना चाहिए। उन्होंने मन को गिरा कर अपनी वर्तमान शोचनीय हालत पैदा कर ली है। इसलिए उनके साथ दया तो करनी ही चाहिए।

मै चाहती हूँ कि मुझमें इतनी ताकत होती कि मैं इन लोगों को जगा [illegible] लेखों में इतना दम होता कि वे पुरानी [illegible] और पहले से ही सोचे हुए मार्ग को

न पकड़ते। मैं चाहती हूँ कि वे अपने दिल और दिमाग को लगाकर मेरी तरह इस सच्ची बात का अनुभव करते 'कि विचारों में जीवन को बदल देने की एक जबर्दस्त ताकत है।' यह ताकत स्त्री-पुरुष, बालक सब में मौजूद है, वे जिस तरह चाहें इसका प्रयोग कर सकते हैं। प्रत्येक मनुष्य स्वतन्त्रता से विचारता है और उसका परिणाम भी वही भोगता है। उसके मार्ग में कोई रोड़े नहीं अटका सकता।

पाठक वृन्द, आप चाहे जिस पद पर हों, और अमीर हों या गरीब, किन्तु याद रखिए आपके पास पारस पत्थर है। आप चाहें तो आज से ही अपने मन, शरीर और अपनी परिस्थितियों को सुधारकर अपना जीवन बनाना प्रारम्भ कर दें। आगे चल कर आप देखेंगे कि आपका जीवन रूपी निकृष्ट धातु बदल कर असली सोना हो गया है।

आपको यह आशा न करनी चाहिए कि हमको दुःख, मूर्खता और परेशानियों से तुरन्त छुट्टी मिल जायगी। जीवन को सुखी और स्वर्गीय बनाने में यदि २०, ३०, ४०, या ६० वर्ष लग जायँ तो भी कोई हर्ज नहीं है। जीवन में उथल-पुथल होगा अवश्य, इसमें कोई संदेह न समझिए। सम्भव है वर्षों बीत जावें और उन्नति न दिखलाई पड़े, लेकिन आपको मालूम होता रहेगा कि सुधार का काम भीतर-भीतर चल रहा है, हमारी भारी

कठिनाइयाँ दूर हो रही हैं और हमारी मौलिक शक्ति का विकास निर्विघ्न हो रहा है। जिस लक्ष्य को लेकर आपने विचार करना शुरू किया है, उसकी पूर्ति अवश्य होगी, इसका स्मरण रखिए। आपके विचारों का अन्त इसी छोटे जीवन में न होगा। उनकी लड़ी बराबर जन्मजन्मान्तर में चलती जायगी। जो बीज आपने आज बोया है उसकी फसल आगे चलकर अवश्य तैयार होगी।

"यदि कोई पूछे कि तुम दुखी और सुखी क्यों होते हो तो उससे कह दो कि मैं दुखी इस वास्ते हूँ कि मैंने इतने वर्षों के बाद अपने को जाना है और सुखी इस वास्ते हूँ कि मेरा भविष्य अब बहुत अच्छा है।"

अरे यह जीवन कितना सुखी है। अरे यह जीवन कितना सुन्दर है। अरे यह जीवन कितनी विचित्र बातों और वस्तुओं से भरा है।

इमरसन ने क्या ही अच्छा कहा है:—

"मैं सम्पूर्ण पृथ्वी-मण्डल का स्वामी हूँ। सप्त तारा मण्डल और सूर्य की वार्षिक परिक्रमा का मैं संचालक हूँ। मैं सीजर का हाथ और प्लेटो का मस्तिष्क हूँ। मैं ईसा का हृदय और शेक्सपियर का गान हूँ।"

जब आपको सब मिल जाय तो

जब मनुष्य को शान्ति और आनन्द देने वाली अज्ञात मन की विचार-शक्ति मिल जाय तो उस समय उसे बहुत सँभल कर उसका प्रयोग करने की जरूरत है। ऐसा न हो कि उसमें लाभ के बदले हानि पहुँचने लगे। मनुष्य यदि किसी भी शक्ति का उचित प्रयोग न जाने या जानकर करे तो वह उसे अपने ही स्वार्थ-पूर्ण उद्देश्य की पूर्ति में लगाकर बेकार कर सकता है।

जो शक्तियाँ मनुष्य के मन में छिपी हैं उनका कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य है। संसार के पैगम्बरों ने लोगों को सच्चे मार्ग का जीवन उसी तरह समझाया है जिस तरह वे समझ सके हैं। महात्मा ईसा ने जब जनसाधारण में उपदेश किया तो दृष्टान्त द्वारा उन्हें समझाया। किन्तु जब वे अपने शिष्यों से बात करते थे तो कहते, "शिष्यो, ईश्वर के राज्य की गुप्त बातें तुमको मैं सीधे बतलाता हूँ, क्योंकि तुम बुद्धिमान हो, किन्तु जनता को मैं दृष्टान्त द्वारा बतलाता हूँ क्योंकि वह आँख रखती हुई भी नहीं देखती, कान रखती हुई भी नहीं सुनती।" सेंटपाल एक स्थान में कहते हैं, "मैं जनता को उपदेश रूपी दूध और उपदेश रूपी ताकत पैदा करने वाला मांस दे रहा हूँ।" जब सेंटपाल

के हृदय में प्रकाश हुआ तो एक आवाज ने उनसे पूछा, "जो तबियत हो माँग लो, वह तुम्हें दी जायगी।" उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे बुद्धि और ज्ञान दो। जिन्हें मैं जनता की भलाई और सुख में लगा सकूँ।" इस तरह का निस्वार्थ उत्तर दुर्बल मनुष्य नहीं दे सकता है।

इसमें कुछ भी शंका नहीं है कि विचारों में बड़ी जबरदस्त ताकत है और स्त्री और पुरुष इस गुप्त ताकत के बल पर जैसे चाहे वैसा अपने को बना सकते हैं। हम परिस्थितियों को बेहतर बनाना चाहते हैं, हम अपना अनुभव और अधिक बढ़ाना चाहते हैं, हम मनुष्य के साथ का अपना सम्बन्ध और भी अच्छा करना चाहते हैं और यदि हमारी चले तो हम इन सब को एकदम बदल दें किन्तु हम में इतनी हिम्मत नहीं है कि चली आती हुई पुरानी प्रथा को मिटाकर हम उनको एकदम बदल दें। जब तक हम बाबा आदम के समय से चली आती हुई पुरानी प्रथा को मटियामेट नहीं करेंगे तब तक हमारे विचारों को जबरदस्त ताकत की सचाई नहीं प्रमाणित होगी।

तिरस्कार के योग्य नहीं यह,
शक्ति अमित महिमाशाली।
विरोधियों का अहित भक्त का,
हित सदैव करने वाली।
जहाँ गूढ़ उपकार भाव हैं,
करती है आनन्द प्रदान।

पर पीड़न व्यापार जहाँ है,
लाती वहाँ विपद-व्यवधान।
सभी ठौर जाती है इसकी,
सर्वदर्शिनी पैनी दृष्टि।
सत्कार्यों के हित करती है,
उचित पारितोषिक की वृष्टि।
किन्तु जहाँ देखेगी कोई,
अनाचार, हो जब प्रचंड।
धर्म भाव की परम रक्षिका,
देगी पापी को भी दण्ड।
क्रोध नहीं है, क्षमा नहीं है,
उसमें लेश विकार नहीं।
उसकी निर्मल कार्य्यवाहियों—
में कुछ दोष प्रहार नहीं।
उसका न्याय नहीं टल सकता,
हो विलम्ब से या सत्वर।
इच्छा होगी, आज करेगी,
या कुछ दिन गत होने पर।

अभी तक हमने जो विचार किये हैं या जो काम किये हैं उन्हीं के फल हम भोग रहे हैं (क्योंकि विचारों से ही काम किये जाते हैं और दोनों का सम्बन्ध-विच्छेद नहीं किया जा सकता)। यह बात बिलकुल सच है कि अभी तक हमने जो विचार किया है; वह विचार की महान् शक्ति को न समझते हुए किया है। विचार की महान् शक्ति से अभी तक हम बिल-

कुल अनभिज्ञ थे। विचारों का परिणाम क्या होता है, हम इसे भी नहीं जानते थे। अनभिज्ञ होने से ही विचार की पुरानी शैली को हम अभी तक नहीं तोड़ सके हैं और इसलिए उसका फल भोग रहे हैं।

"मनुष्य जैसा बोता है वैसा काटता है।"

"जिस तरह का बर्ताव तुम दूसरों के साथ करोगे उसी प्रकार का बर्ताव दूसरे भी तुम्हारे साथ करेंगे।"

जो अतीत जीवन की खेती हमने पहले बोई।
वही काटनी होगी हम को अन्य उपाय न कोई॥
लाभ मिले सो लेना होगा क्लेश उठानी होगी।
कर्म हमारे हानि योग्य तो मुँह की खानी होगी॥
जन्म-जन्म में जहाँ किये हैं कर्म अहित हितकारी।
अधिक-अधिक फलते रहते हैं दोनों ही अनुसारी॥
पाई-पाई का हिसाब सब हमको करना होगा।
छुट्टी नहीं मिलेगी हमको ऋण सब भरना होगा॥
नव-जीवन जो सम्मुख आता उसे ध्यान से देखो।
अमित विगत जीवन-संस्कृति का सार उन्हीं में लेखो॥
पूर्व जीवनों के प्रसाद की छाया उनमें देखो।
पूर्व जीवनों के प्रसाद की माया उनमें देखो॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि जितने पैगम्बर हुए हैं उन सबों ने इसी बात की शिक्षा दी है कि मनुष्य के विचार ही उसके जीवन के निर्माता हैं।

किन्तु आश्चर्य है कि लोग इस सचाई को कभी-कभी भूल जाते हैं और उसकी उपेक्षा करते हैं, उसे वह प्रधान

करते जो वे अपनी ईश्वर पूजा को देते हैं, न उसे कहीं लिखकर अपने पास रखते हैं। कुछ शताब्दियों के बाद वह सचाई फिर लोगों के सामने उपस्थित होती है और वे कहने लगते हैं कि एक नई चीज हमें मिली, एक ऐसी चीज मिली जो सब धर्मों से भिन्न है और उसे वे 'नई रोशनी' के नाम से पुकारते हैं। वास्तव में यह कोई नई चीज नहीं है। इसकी शिक्षा बुद्ध भगवान ने महात्मा ईसा के पाँच सौ वर्ष पहिले दी थी। उसकी शिक्षा सेंटपाल ने दी थी। उनके वचन ही हमारे कथन की सत्यता के ऐसे प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जिसमें किसी प्रकार की शंका की गुंजाइश नहीं है।

बुद्ध भगवान ने कहा था :—

"मन के विचारों ने हमें बनाया है। इस समय हम जो कुछ भी हैं उसके निर्माणकर्ता हमारे विचार हैं। यदि मनुष्य के मन में अपवित्र विचार है तो उसे दुख होता है यदि मनुष्य के मन में पवित्र विचार है तो सुख परछाई की तरह उसके पीछे-पीछे चलती है।"

महात्मा ईसा ने कहा था :—

"जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें वैसा ही ... उनके साथ करो। लोगों को दो तो वे भी तुम्हें देंगे

ाग सुख और शान्ति का राज-प्रसाद निर्माण भी करता है।

"वर्तमान समय में अभी तक आत्मा के सम्बन्ध में जितनी अच्छी-अच्छी बातें कही गई हैं उनमें से इससे बढ़कर कोई सुख-पूर्ण, विकास पूर्ण और आशाजनक बात नहीं कही गई कि मनुष्य अपने विचारों का स्वामी है। वह अपने चरित्र और भाग्य का निर्माता है और परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना सकता है।

अतएव यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने में मौजूद इस बड़ी शक्ति का प्रयोग करना सीखें। यदि हम उसे अपने लाभ के लिए काम में लाते हैं तो हम अधिकारी हैं। इसमें कोई शंका नहीं कि उसके प्रयोग से मनोवांछित फल मिल सकता है लेकिन इसे न भूलो कि हमारी इच्छा हमें सुख देने वाली हो, ऐसा न हो कि उससे हमें दुःख मिले।

तुम्हारे हाथ में जब काँटा लगता है तो कितना चुभता है। वह तुम्हारा ही बोया हुआ है। संभव है वर्षों पहले तुमने बोया हो लेकिन बोया तुम्हीं ने है और इसलिए कार्य और कारण के कानून से वह तुम्हारे हाथ में उगता है और तुम्हे दुख होता है। इसको तुम्हें भोगना तो अवश्य ही पड़ेगा। लेकिन एक बात तुम कर सकते हो। उसी काँटे के बगल में प्रेम, शान्ति और सुखपूर्ण पवित्र विचारों के कुछ बीज बो सकते हो। समय पाकर खेती तैयार हो जायगी जिससे तुमको सुख होगा और काँटे के दुख को तुम सह सकोगे। ऐसा समय भी आ सकता है जब तुम्हारे जीवन से काँटा एकदम निकल जाय।

क्या आप अपने जीवन को सुखी और सफल बनाना चाहते हैं? तो ऐसा ज्ञान और ऐसी शक्ति पैदा कीजिए जिनके द्वारा अपने भाइयों के विश्वासपात्र बन जायँ और उनको लाभ पहुँचा सकें। दिन-रात इसी विषय पर ध्यान दीजिये। शुद्ध, पवित्र और निःस्वार्थ विचारों का मंडल मन के ऊपर तान दीजिये। आचरण शुद्ध रखिये। उच्च लक्ष्य को हमेशा सामने रखिये। विचारों के फलने की प्रतीक्षा कीजिये। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि आपके अच्छे दिन आयेंगे और आपके मन की इच्छा पूरी होगी। उसके पाने के योग्य अपने को बनाते रहिये, उसी के साँचे में अपने चरित्र को ढालते

तुम्हारे हाथ में जब काँटा लगता है तो कितना चुभता है। वह तुम्हारा ही बोया हुआ है। सम्भव है वर्षों पहले तुमने बोया हो लेकिन बोया तुम्हीं ने है और इसलिए कार्य और कारण के कानून से वह तुम्हारे हाथ में उगता है और तुम्हें दुख होता है। इसको तुम्हें भोगना तो अवश्य ही पड़ेगा। लेकिन एक बात तुम कर सकते हो। उसी काँटे के बगल में प्रेम, शान्ति और सुखपूर्ण पवित्र विचारों के कुछ बीज बो सकते हो। समय पाकर खेती तैयार हो जायगी जिससे तुमको सुख होगा और काँटे के दुख को तुम सह सकोगे। ऐसा समय भी आ सकता है जब तुम्हारे जीवन से काँटा एकदम निकल जाय।

क्या आप अपने जीवन को सुखी और सफल बनाना चाहते हैं? तो ऐसा ज्ञान और ऐसी शक्ति पैदा कीजिए जिनके द्वारा अपने भाइयों के विश्वासपात्र बन जायँ और उनको लाभ पहुँचा सकें। दिन-रात इसी विषय पर ध्यान दीजिये। शुद्ध, पवित्र और निःस्वार्थ विचारों का मंडल मन के ऊपर तान दीजिये। आचरण शुद्ध रखिये। उच्च लक्ष्य को हमेशा सामने रखिये। विचारों के फलने की प्रतीक्षा कीजिये। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि आपके अच्छे दिन आयेंगे और आपके मन की इच्छा पूरी होगी। उसके पाने के योग्य अपने को बनाते रहिये, उसी के साँचे में अपने चरित्र को ढालते

और एक दिन मैंने उसे सामने खड़े हुए पाया। कभी-कभी मैंने देखा कि उसे पाने के लिए बहुत लम्बा रास्ता तय करना पड़ा और कई बार मै अपने लक्ष्य से थोड़ी देर के लिए अलग हो गई। लेकिन मेरा काम ईश्वरीय कानून के अनुसार भीतर भीतर होता रहा और ठीक समय आने पर वह मुझे मिल गई।

गेटे के शब्दों को याद रखिये, "अपनी इच्छाओं से हमेशा होशियार रहो, क्योंकि जिन वस्तुओं की तुम इच्छा करोगे वे अवश्य तुम्हें प्राप्त होंगी।"

इच्छा-पूर्ति के अनन्तर अपने पारस पत्थर को काम में लाओ। किन्तु उसका प्रयोग करने से पहले अपने हृदय की जाँच करो, अपने भावों की परख करो और अपनी इच्छा को अच्छी तरह समझ लो। उसी इच्छा से तुम्हारा चरित्र सुदृढ़ होगा और तुम्हें ऐसे सुअवसर प्राप्त होंगे जिनसे तुम्हारे जीवन का दृष्टिकोण विस्तृत हो जायगा और तुम अपने जीवन को उच्च बना कर संसार की भलाई करते हुए ईश्वर का गुणानुवाद कर सकोगे।

कौन वहाँ बाधक हो सकता,
जहाँ अचल संकल्प महान।
भाग्यवाद संयोगवाद यें,
शक्ति कहाँ डालें व्यवधान

खड़ा हिमालय भी हो पथ में,
तो उसको हटना होगा।
मनस्वियों के मानस-भूमि से,
हिम नहीं कटना होगा
सरिता चला सिन्धु से मिलने,
उसे भला रोकेगा कौन
मन अश्व रथ चढ़ तरणि को,
साहस कर टोकेगा कौन?
ढूंढ नहीं पाया है जिसने,
बना कर वह मनमाना।
जिसने कर ली अटल प्रतिज्ञा,
उसको तो आगे जाना।
निर्धारित जो लक्ष्य हो गया,
नहीं रंच डिगना उससे।
अपना जो उद्देश्य बना भी,
कभी नहीं हिलना उससे।
स्वयं काल भी यदि आ जावे,
एक बार संकल्प प्रखर—
देख, सहम कर …

और एक दिन मैंने उसे सामने खड़े हुए पाया। कभी-कभी तो मैंने देखा कि उसे पाने के लिए बहुत लम्बा रास्ता तय करना पड़ा और कई बार मैं अपने लक्ष्य से थोड़ी देर के लिए अलग हो गई। लेकिन मेरा काम ईश्वरीय कानून के अनुसार भीतर-भीतर होता रहा और ठीक समय आने पर वह मुझे मिल गई।

गेटे के शब्दों को याद रखिये, "अपनी इच्छाओं से हमेशा होशियार रहो, क्योंकि जिन वस्तुओं की तुम इच्छा करोगे वे अवश्य तुम्हें प्राप्त होंगी।"

इच्छा-पूर्ति के अनन्तर अपने पारस पत्थर को काम में लाओ। किन्तु उसका प्रयोग करने से पहले अपने हृदय की जाँच करो, अपने भावों की परख करो और अपनी इच्छा को अच्छी तरह समझ लो। उसी इच्छा से तुम्हारा चरित्र सुदृढ़ होगा और तुम्हें ऐसे सुअवसर प्राप्त होंगे जिनसे तुम्हारे जीवन का दृष्टिकोण विस्तृत हो जायगा और तुम अपने जीवन को उच्च बना कर ससार की भलाई करते हुए ईश्वर का गुणानुवाद कर सकोगे।

कौन वहाँ बाधक हो सकता,
जहाँ अचल संकल्प महान।
भाग्यवाद संयोगवाद में,
शक्ति कहाँ डालें व्यवधान?

और एक दिन मैंने उसे सामने खड़े हुए पाया। कभी-क
मैंने देखा कि उसे पाने के लिए बहुत लम्बा रास्ता तय
रहा और कई बार मैं अपने लक्ष्य से थोड़ी देर के लिए
हो गई। लेकिन मेरा काम ईश्वरीय कानून के अनुसार
भीतर होता रहा और ठीक समय आने पर वह मुझे मिल

गेटे के शब्दों को याद रखिये, "अपनी इच्छाओं में
होशियार रहो, क्योंकि जिन वस्तुओं की तुम इच्छा क
अवश्य तुम्हें प्राप्त होंगी।"

इच्छा-पूर्ति के अनन्तर अपने पारस पत्थर को
लाओ। किन्तु उसका प्रयोग करने से पहले अपने
जाँच करो, अपने भावों की परख करो और अपनी इच्
अच्छी तरह समझ लो। इसी इच्छा से तुम्हारा चरित्
होगा और तुम्हें ऐसे सुअवसर प्राप्त होंगे जिनसे तुम्हारे
का दृष्टिकोण विस्तृत हो जायगा और तुम अपने भी
उस धन का सदुपयोग भी करोगे। तुम ईश्वर का गुण
कर सकोगे।

कौन कहाँ बाधक हो
जहाँ [illegible] [illegible]

खड़ा हिमालय भी हो पथ में,
तो उसको हटना होगा।
मनस्त्रियों के मानस-असि से,
किसे नहीं कटना होगा।
सरिता चली सिन्धु से मिलने,
उसे भला रोकेगा कौन।
सप्त अश्व रथ चढ़े तरणि को,
साहस कर टोंकेगा कौन?
बुद्धि नहीं पायी है जिसने,
धका करे वह मनमाना।
जिसने कर ली अटल प्रतिज्ञा,
उसको तो आगे जाना।
निर्धारित जो लक्ष्य हो गया,
नहीं रंच डिगना उससे।
अपना जो उद्देश्य लेश भी,
कभी नहीं हिलना उससे।
स्वयं काल भी यदि आ जावे,
एक बार संकल्प प्रखर—
देख, सहम कर रुक जावेगा,
[illegible] वेगा कुछ काल ठहर।